सहस्त्राब्दि के सबसे बौने लोग

इस बार वे फिर
धर्म की आड़ में आए हैं
इलाके की शान्ति को चौथते
वे मन्दिरों से
माइकों पर
अपनी बेसुरा आवाजों में
जहर घोलते सुने जाते हैं

.

लाल किले के प्राचीर से
उनका बहुरुपिया प्रधान
कलाबाजियां दिखाता है
मदारी की जुबान में बात करता
वह सेठों की तिजोरियां भरता है
तुम्हारी विवशता पर
उसकी हंसती हुयी बत्तीसी
साफ-साफ दिखती है

.

वह मदारी की जुबान में
सारी समस्याओं को
हल करने का चूरन
अपनी किस्मत से जोड़ता है
वह बताता है कि
उसकी किस्मत से
देश का कायापलट हो जाएगा
वह यकीन दिलाता है कि
इस गहरे संकट में
भगवान तुम्हारे धैर्य की
परीक्षा ले रहा है
और जो इस परीक्षा में
उत्तीर्ण होगा
उसे ईश्वर
जन्नत बख्शेगा
उसे हूरें मिलेंगी
उसका परलोक
अच्छा हो जाएगा

.

इस तरह वह
लोक को भोगता है
और तुम्हें
परलोक के झांसे में
उलझाए रखता है

.

उसकी शातिराना चालों में
तुम निरन्तर उलझते जाते हो
और उसका अट्टाहस
दिन ब दिन बढ़ता चला जाता है

.

इस बार वे फिर
धर्म की आड़ में आए हैं
तुमसे तुम्हारे राम को छीनते
और श्रीराम के नारे लगाते
उन्होंने तुम्हारे सुख के मन्दिर
का अपहरण कर लिया है
और कलह का मन्दिर
भेंट कर दिया है
मैं दुहरा रहा हूं
वे मदारी हैं
'जय राम जी की' वालों
उन्हें इस देश से कोई प्रेम नहीं
वे जो नहीं हैं
वही दिखलाने की कोशिश करते हैं
पुरजोर !
मसलन राष्ट्रप्रेम !!
वे सबकुछ गठिया कर
चलते बनते हैं
देश से बाहर

इस बार फिर वे धर्म की आड़ में आए हैं
धर्म की दुहाई देते हुए
अपने सबसे अधार्मिक चेहरे के साथ
जैसे धर्म का उद्देश्य
सत्य-पथ पर नियोजित करना है
और वे
भरे हुए हैं
झूठ, छल और प्रपंच से
वे तुम्हारी चाह को 'माया' में घटित कर देते हैं
जबकि 'माया'
उनके सर चढ़ कर बोलती है,
उन्होंने सदियों के
उतार-चढ़ाव के बाद
रिश्तों में हासिल की गयी
सहजता को
त्रिशूल और खुखरी से
बींध दिया है,
यकीन मानो
वे कत्तई धर्मिक नहीं
वे सहस्त्राब्दि के
सबसे बौने लोग हैं.

- साइबर नजर

पछतावा

आस्ट्रेलिया की ब्रोनी वेयर कई वर्षों तक कोई meaningful काम तलाशती रहीं, लेकिन कोई शैक्षणिक योग्यता एवं अनुभव न होने के कारण बात नहीं बनी।

फिर उन्होंने एक हॉस्पिटल की Palliative Care Unit में काम करना शुरू किया। यह वो nit होती है जिसमें Terminally ill या last stage वाले मरीजों को admit किया जाता है। यहाँ मृत्यु से जूझ रहे लाईलाज बीमारियों व असहनीय दर्द से पीड़ित मरीजों के मेडिकल डोज़ को धीरे-धीरे कम किया जाता है और काऊँसिलिंग के माध्यम से उनकी spiritual and faith healing की जाती है ताकि वे एक शांतिपूर्ण मृत्यु की ओर उन्मुख हो सकें।

ब्रोनी वेयर ने ब्रिटेन और मिडिल ईस्ट में कई वर्षों तक मरीजों की counselling करते हुए पाया कि मरते हुए लोगों को कोई न कोई पछतावा ज़रूर था।

कई सालों तक सैकड़ों मरीजों की काउंसलिंग करने के बाद ब्रोनी वेयर ने मरते हुए मरीजों के सबसे बड़े 'पछतावे' या 'regret' में एक कॉमन पैटर्न पाया।

जैसा कि हम सब इस universal truth से वाकिफ़ हैं कि मरता हुआ व्यक्ति हमेशा सच बोलता है, उसकी कही एक-एक बात epiphany अर्थात 'ईश्वर की वाणी' जैसी होती है। मरते हुए मरीजों के इपिफ़नीज़ को ब्रोनी वेयर ने 2009 में एक ब्लॉग के रूप में रिकॉर्ड किया। बाद में उन्होनें अपने निष्कर्षों को एक किताब "THE TOP FIVE REGRETS of the DYING" के रूम में publish किया। छपते ही यह विश्व की Best Selling Book साबित हुई और अब तक लगभग 29 भाषाओं में छप चुकी है। पूरी दुनिया में इसे 10 लाख से भी ज़्यादा लोगों ने पढ़ा और प्रेरित हुए।

ब्रोनी द्वारा listed 'पाँच सबसे बड़े पछतावे' संक्षिप्त में ये हैं-

1) ''काश मैं दूसरों के अनुसार न जीकर अपने अनुसार जिंदगी जीने की हिम्मत जुटा पाता!"

यह सबसे ज़्यादा कॉमन रिग्रेट था, इसमें यह भी शामिल था कि जब तक हम यह महसूस कर पाते हैं कि अच्छा स्वास्थ्य ही आज़ादी से जीने की राह देता है तब तक यह हाथ से निकल चुका होता है।

2) "काश मैंने इतनी कड़ी मेहनत न की होती"

ब्रोनी ने बताया कि उन्होंने जितने भी पुरुष मरीजों का उपचार किया लगभग सभी को यह पछतावा था कि उन्होंने अपने रिश्तों को समय न दे पाने की ग़लती मानी।

ज़्यादातर मरीजों को पछतावा था कि उन्होंने अपना अधिकतर जीवन अपने कार्य स्थल पर खर्च कर दिया!

उनमें से हर एक ने कहा कि वे थोड़ी कम कड़ी मेहनत करके अपने और अपनों के लिए समय निकाल सकते थे।

3) "काश मैं अपनी फ़ीलिंग्स का इज़हार करने की हिम्मत जुटा पाता"

ब्रोनी वेयर ने पाया कि बहुत सारे लोगों ने अपनी भावनाओं का केवल इसलिए गला घोंट दिया ताकि शाँति बनी रहे, परिणाम स्वरूप उनको औसत दर्ज़े का जीवन जीना पड़ा और वे जीवन में अपनी वास्तविक योग्यता के अनुसार जगह नहीं पा सके! इस बात की कड़वाहट और असंतोष के कारण उनको कई बीमारियाँ हो गयीं!

4) "काश मैं अपने दोस्तों के सम्पर्क में रहा होता"

ब्रोनी ने देखा कि अक्सर लोगों को मृत्यु के नज़दीक पहुँचने तक पुराने दोस्ती के पूरे फायदों का वास्तविक एहसास ही नहीं हुआ था!

अधिकतर तो अपनी जिन्दगी में इतने उलझ गये थे कि उनकी कई वर्ष पुरानी 'गोल्डन फ़्रेंडशिप' उनके हाथ से निकल गयी थी। उन्हें 'दोस्ती' को अपेक्षित समय और ज़ोर न देने का गहरा अफ़सोस था। हर कोई मरते वक्त अपने दोस्तों को याद कर रहा था!

5) "काश मैं अपनी इच्छानुसार स्वयं को खुश रख पाता!!!"

आम आश्चर्य की यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात सामने आयी कि कई लोगों को जीवन के अन्त तक यह पता ही नहीं लगता है कि "खुशी" भी एक choice है!

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि-

"खुशी वर्तमान पल में है"...

- साइबर नजर

कहानियों में जीना-मरना

कहानी के पीछे पगलाए घूमना हर किसी के मिजाज में नहीं होता। न जाने कितनी बार मैंने अपने भाइयों के पैर दबाए, उनसे किसी फिल्म की कहानी सुनने के लिए। गर्मी की दुपहरियों में घंटों लुरखुर काका की गाय-भैंसों पर नजर रखी ताकि लोरिक-संवरू और दयाराम ग्वाल के पंवारे सुनाते हुए उनकी कल्पना और लयकारी में कोई खलल न पड़े। अकबर-बीरबल, शीत-बसंत और राजा भरथरी के किस्से चिथरू चाचा से सुनने के लिए जाड़ों की शाम सूरज झुकने के भी घंटा भर पहले मैं उनके दरवाजे पर हाजिरी लगा देता था।

उनके कई सारे काम तब अधबीच में होते थे और वहां मेरी असमय उपस्थिति से परेशान उनके घर वाले हिकारत से मुझे देखकर मुंह बिचका देते थे। फिर उपन्यास पढ़ने की उम्र हुई तो इसके लिए बड़ों की निर्लज्ज चापलूसी, यहां तक कि चोरी-चकारी जैसा कर्म भी मुझे कभी अटपटा नहीं लगा। कहानियों के पीछे इस दीवानगी की एक बड़ी वजह अपने परिवेश से अलगाव और मन पर छाए गहरे अकेलेपन से जुड़ी हो सकती है। लेकिन बाद में लगा कि यह कोई वैसी अनोखी बात नहीं है, जैसी शुरू में मुझे लगा करती थी।

किसी मुश्किल से मुश्किल बात को भी अगर कहानी की तरह सुनाया जा सके तो इससे दो नतीजे निकलते हैं। एक यह कि सुनाने वाला बात को अच्छी तरह समझ गया है। दूसरा यह कि जिसे सुनाई जा रही है, बात का काफी हिस्सा उसकी समझ में आ जाएगा। झूठ और गप्प से घिरे हुए इस समय में ज्यादातर लोग बातों को समझ लेने का ढोंग भर करते हैं। तकनीकी जुमलेबाजी से भरी बातें अक्सर बताई भी इसीलिए जाती हैं कि लोग उन्हें न समझें और ऊबकर या नासमझ मान लिए जाने के डर से मुंडी हिलाकर छुट्टी पा लें। और तो और, काफी सारे साहित्यिक कथ्य पर भी यह बात लागू होती है!

कुछ समय पहले एक थ्रिलर से गुजरते वक्त उसमें आए इस वाक्य पर नजर अटक गई- 'हम कहानियों के लिए जीते हैं, कहानियों के लिए ही मरते हैं।' क्या सचमुच? तनख्वाह में हर पांचवें साल एक नया जीरो जोड़ते हुए आगे बढ़ने वाले एक कामयाब परिचित से न जाने किस रौ में एक दिन अचानक मैंने पूछ लिया, 'तुम्हारे बच्चे कभी तुमसे तुम्हारी कहानी सुनना चाहेंगे तो उन्हें क्या सुनाओगे? यही कि क्या-क्या किया तो सैलरी कितनी बढ़ गई?'

यकीनन मेरे इस सवाल में अजनबियत भरी थी। कहानियां उसके पास थीं। बस, जिंदगी की चूहा-दौड़ में शामिल हो जाने के बाद उन्हें पलट कर याद करने का मौका उसको एक जमाने से नहीं मिला था। उस चढ़ती रात में हम देर तक बतियाते रहे। पढ़ाई पूरी करने के बाद तीन साल लंबी उसकी भटकन के किस्सों ने हमारे बीच के अंधेरे कोने को चमकते जुगनुओं से भरी हुई झाड़ी जैसा बना दिया। लगा कि एक लंबी कहानी के नगण्य पात्र ही हैं हम। बस सुनाए जाने की देर है।

- साइबर नजर

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन, जीवा पब्लिक स्कूल

विज्ञान का वास्तविक स्वरूप

विज्ञान ने आज विश्व को एक नया रूप दिया है। यदि हम विज्ञान की परिभाषा देखें तो विभिन्न लोगों के विभिन्न मत हैं जैसे विज्ञान मनुष्य के कार्य को सरल बनाता है। विज्ञान नित नए अविष्कार का नाम है इत्यादि। अनेक ऐसी परिभाषाएँ हैं जिसके माध्यम में हम यह कह सकते हैं कि विज्ञान का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य जाति के उत्थान, शांति और प्रगति ही है। परन्तु यदि हम देखें तो पायेंगे कि विज्ञान के द्वारा मनुष्य ने सुख-सुविधाएँ तो अवश्य ही प्राप्त की हैं लेकिन इन सुख-सुविधाओं का पृथ्वी के वातावरण पर बहुत हानिकारक प्रभाव भी पड़ा है जिसका दूरगामी प्रभाव अंत में इस पृथ्वी पर ही पड़ेगा और मनुष्यों के साथ- साथ अन्य जीव जगत को भी हम क्षति पहुँचाएँगे या पहुँचा रहे हैं। फिर क्या यह विज्ञान का कल्याणकारी रूप हो सकता है? नहीं !

आज विश्व, विज्ञान के नित नए अविष्कारों को जिस प्रकार से अपना रहा है क्या यह उचित है? हम मनुष्यों को चाहिए कि अपने सुख- सुविधाओं के साथ अपने आस-पास के पर्यावरण के लिए वह कार्य करें जो सही है। भारत के प्राचीन सभ्यता की जो परम्पराएँ हैं वह सभी विज्ञान से संबंधित हैं। जैसे भोजन करने से पहले हाथ धोना, घर के अंदर जूते नहीं पहनना, घर के आंगन में तुलसी का होना पीपल, नीम, वट वृक्ष की रक्षा करना इत्यादि। उनका पर्यावरण पर कोई दुष्परिणाम नहीं होता था। आज हमें एक बार फिर सोचना होगा कि हम विज्ञान के द्वारा प्राप्त सुख सुविधाओं के प्रयोग के साथ पर्यावरण के बारे में भी अवश्य सोचें। साथ ही अपनी परम्परागत संस्कृति एवं उपलब्ध प्राचीन वैज्ञानिक विचारधाराओं को अपनाएँ। भारत में प्राचीन काल में अनेक ऐसे वैज्ञानिक हुए हैं जिन्होंने चिकित्सा से लेकर अनेक विषयों पर शोध व खोज दोनों किए हैं और जिनका पृथ्वी के पर्यावरण पर भी कोई दुष्परिणाम नहीं हुआ। जिन्होंने विज्ञान के वास्तविक स्वरूप को जाना व अपनाया। इसकी उपयोगिता केवल मनुष्य के लिए नहीं अपितु पूरे विश्व के कल्याण के लिए होनी चाहिए।